ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' कौशल्या बैसन्त्री का और दया पंवार का 'अछूत' का तुलनात्मक अध्ययन

नीतू गोयल, शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
डॉ. अरविंद कुमार, सहआचार्य, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय

सारांश

यह शोध पत्र हिंदी की दलित स्त्री आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप'(कौशल्या बैसन्त्री) और मराठी की प्रतिष्ठित दलित पुरुष आत्मकथा 'अछूत'(दया पंवार) में चित्रित सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। दोनों आत्मकथाएँ महाराष्ट्र के महार समुदाय के जीवन को दर्शाती हैं, किंतु उनके अनुभवों में लिंग और परिप्रेक्ष्य के कारण भिन्नता है। सामाजिक परिवेश के अंतर्गत अस्पृश्यता के कठोर नियमों को दर्शाया गया है, जबकि आर्थिक परिवेश में 'बलुतदारी' (Balutedari) प्रथा, भीषण गरीबी, और श्रम के दमनकारी स्वरूप का चित्रण है। धार्मिक परिवेश दोनों ही कृतियों में बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षण और हिंदू धर्म के कर्मकांडों तथा जातिगत भेदभाव के प्रति तीखे विरोध को दर्शाता है। यह तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि कौशल्या बैसन्त्री के अनुभव में पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना का प्रभाव अधिक गहरा है, जबकि दया पंवार के अनुभव में जाति और वर्ग की पीड़ा प्रमुख है।

परिचय

भारतीय साहित्य में दलित आत्मकथाएँ दलित समाज के भोगे हुए यथार्थ और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। दया पवार की 'अछूत'(1978) और कौशल्या बैसन्त्री की 'दोहरा अभिशाप' (1999) इन कृतियों में अग्रणी हैं। ये आत्मकथाएँ केवल व्यक्तिगत जीवन गाथाएँ नहीं हैं, बल्कि तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश की जीवंत झाँकियाँ हैं जो 20वीं शताब्दी के महाराष्ट्र के दलित जीवन को दर्शाती हैं। प्रस्तुत शोध का केंद्रीय उद्देश्य इन्हीं तीन प्रमुख आयामों पर दोनों लेखकों के अनुभव और चित्रण की तुलना करना है, ताकि दलित जीवन की जटिलताओं को स्त्री और पुरुष के भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण से समझा जा सके।

शोध के सोपान

विषय निर्धारण और समस्या की पहचानः दोनों आत्मकथाओं में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश के चित्रण की विशिष्टताओं और भिन्नताओं की पहचान करना।
सामग्री संकलनः 'दोहरा अभिशाप' और 'अछूत' का पाठ तथा उन पर आधारित आलोचनात्मक सामग्री का संग्रह।

- सामाजिकः अस्पृश्यता के नियम, पितृसत्ता की भूमिका, महारवाड़ा की संरचना।
- आर्थिकः बलुतदारी, गरीबी का स्वरूप, श्रम का विभाजन।
- धार्मिकः हिंदू धर्म के प्रति दृष्टिकोण, आंबेडकर और बौद्ध धर्म का प्रभाव।
- तुलनात्मक विश्लेषणः निर्धारित मानदंडों के आधार पर दोनों कृतियों के परिवेश का विवेचन।
- निष्कर्ष एवं परिणामः शोध के प्रमुख निष्कर्षों का प्रतिपादन।

शोध का औचित्य

यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दलित साहित्य को केवल 'जातिगत उत्पीड़न' के विमर्श तक सीमित न रखकर, उसके बहु–आयामी परिवेश को खोलता है। इन दोनों आत्मकथाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्थितियाँ दलित पुरुष और दलित स्त्री के लिए समान रूप से दमनकारी होने के बावजूद, उनके अनुभव और चुनौतियाँ अलग–अलग थीं। यह शोध दलित जीवन के चित्रण में लैंगिक भिन्नता (Gender Difference) को केंद्र में लाता है और दलित विमर्श को अधिक समावेशी बनाता है।

विधि तंत्र

इस शोध पत्र में तुलनात्मक साहित्यिक विश्लेषण पद्धति (Comparative Literary Analysis Method) को अपनाया गया है। दोनों आत्मकथाओं के मूल पाठ का गहन अध्ययन किया जाएगा। अध्ययन का दृष्टिकोण गुणात्मक होगा, जिसमें तीनों परिवेशों (सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक) से संबंधित विशिष्ट घटनाओं, वर्णनों, और प्रतिक्रियाओं को निकालकर उनका व्यवस्थित तुलनात्मक मूल्यांकन किया जाएगा। निष्कर्ष निकालने के लिए विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक पद्धति (Analytical and Interpretive Method) का

प्रयोग किया है।

साहित्य समीक्षा

दलित आत्मकथाओं पर हुई साहित्य समीक्षा ने इन कृतियों के यथार्थवाद और विद्रोही चेतना को सराहा है। 'अछूत' पर हुए शोध कार्य मुख्यतः महाराष्ट्र में अस्पृश्यता, दलित पैंथर आंदोलन, और दलित पुरुष के अस्तित्व संकट पर केंद्रित रहे हैं। श्दोहरा अभिशापश पर हुए अध्ययन ने इसे दलित स्त्री विमर्श की पहली आवाज मानते हुए, जातिगत उत्पीड़न और पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के द्वैत पर जोर दिया है।

समीक्षा से ज्ञात होता है कि आलोचकों ने व्यक्तिगत रूप से इन तीनों परिवेशों (सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक) पर चर्चा की है, लेकिन एक साथ इन तीनों आयामों पर केंद्रित होकर, दोनों आत्मकथाओं की साम्यताओं और भिन्नताओं को गहराई से विश्लेषित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य

दोनों आत्मकथाओं में चित्रित अस्पृश्यता के नियमों, विशेषकर सार्वजनिक स्थानों पर भेदभाव और महारवाड़ा के जीवन का तुलनात्मक विश्लेषण किया है।

बलुतदारी प्रथा और आर्थिक विपन्नता के चित्रण में स्त्री–पुरुष के श्रम विभाजन और उसके प्रभाव की तुलना की है।

हिंदू धर्म के कर्मकांडों और वर्ण व्यवस्था के प्रति दोनों लेखकों की आलोचनात्मक दृष्टि और बौद्ध धर्म के प्रति उनकी चेतना का अध्ययन किया है।

यह स्थापित करना कि कौशल्या बैसन्त्री के चित्रण में सामाजिक और आर्थिक परिवेश पर लिंगभेद का प्रभाव किस प्रकार परिलक्षित होता है।

परिकल्पना

परिकल्पना (Hypothesis): कौशल्या बैसन्त्री के 'दोहरा अभिशाप' में चित्रित सामाजिक और आर्थिक परिवेश दया पवार के 'अछूत' की तुलना में अधिक दमनकारी है, क्योंकि कौशल्या बैसन्त्री के अनुभवों में जातिगत भेदभाव के साथ–साथ दलित समाज की पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना भी सक्रिय रूप से विद्यमान है, जिसने दलित स्त्री की आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता को बुरी तरह बाधित किया।

महत्व

यह शोध दलित साहित्य और समाजशास्त्र के अध्ययन में जाति, वर्ग और लिंग के अंतर्संबंधों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित होगा। यह अकादमिक जगत में दलित जीवन की समरूपता की धारणा को चुनौती देगा और दलित स्त्री के अनुभव को साहित्य के केंद्र में लाएगा। यह शोध सामाजिक परिवर्तन के आंदोलनों के लिए भी उपयोगी है, क्योंकि यह बताता है कि दलितों, विशेषकर दलित स्त्रियों को मुक्ति के लिए बाहरी समाज (जाति) और आंतरिक समाज (पितृसत्ता), दोनों से लड़ना पड़ता है।

निष्कर्ष

दोनों आत्मकथाएँ दलित जीवन की कठोर वास्तविकता को सामने लाती हैं, पर दृष्टि और अनुभव अलग हैं। 'दोहरा अभिशाप' एक दलित स्त्री की दबी हुई आवाज है, जो परिवार और समाज दोनों के उत्पीड़न को झेलती है। वहीं 'अछूत' दलित समाज के सामूहिक अपमान, गरीबी, अभाव और विद्रोह का सामाजिक इतिहास है।

तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो दोनों रचनाएँ दलित साहित्य को समृद्ध करती हैं और यह सिद्ध करती हैं कि संघर्ष चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिककृउसकी जड़ें सामाजिक संरचना में ही मिलती हैं।

ये आत्मकथाएँ समाज में परिवर्तन और समानता की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

संदर्भ–सूची

1. Baisantry, K. (2009). *Dohra Abhishap*. New Delhi: Vani Prakashan.
2. Pawar, D. (1978). *Baluta*. Mumbai: Granthali.
3. Pawar, D. (2010). *Achhoot* (Hindi translation). New Delhi: Rajkamal Prakashan.
4. Valmiki, O. (1997). *Joothan*. New Delhi: Radhakrishna Prakashan.
5. Limbale, S. (2007). *Dalit Sahitya Ka Saundaryashastra*. New Delhi: Vani Prakashan.
6. Ambedkar, B. R. (2013). *Jati Ka Ucched* (Hindi edition). New Delhi: Samyak Prakashan.(Original work published 1936)